उपसंहार

BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

उ प सं हा र

मेरे लघु शोध-प्रबंध का विषय है -" डॉ. श्यामसुंदरदास द्वारा संपादित ' कबीर ग्रंथावली ' में अभिव्यक्त कबीर के नारी संबंधी विचार" इस लघु शोध-प्रबंध के प्रथम अध्याय में मैंने संत कबीर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को प्रस्तुत किया है । वैसे देखा जाए तो कबीर के जीवन के विषय में बातें करना अँधेरे में तीर चलाने जैसा है; लेकिन उनके नारीसंबंधी विचार व्यक्त करते समय उनकी जीवनी संक्षेप में लिखना आवश्यक प्रतीत हुआ इसलिए मैंने अन्य अनेक उपलब्ध प्रामाणिक ग्रंथों के आधार पर उनकी जीवनी लिखने का प्रयास किया है ।

महात्मा कबीर के जीवन काल के संबंध में विद्वानों में मतभिन्नता है । उनके जीवनकाल के संबंध में सर्वमान्य ऐतिहासिक तिथि अब तक प्राप्त नहीं हुई है । विविध किंवदंतियों तथा हस्तलिखित प्रतियों के आधार पर विद्वानों ने भिन्न-भिन्न निष्कर्ष निकाले हैं । अनेक विद्वानों के मतों एवं उपलब्ध सामग्री के आधार पर इस बात को मानना पडता है कि कबीर का जीवन काल संवत् १४५६ से संवत् १५७५ तक है । कबीर का जन्म काशी के निकटस्थ मगहर में हुआ । उनका लालन-पालन नीरू और नीमा नामक जुलाहा दाम्पत्य ने किया । कबीर गृहस्थ थे । उनकी लोई और शमजनिया नामक दो पत्नियाँ थीं । कबीर के कमाल और निहाल नामक बेटे और कमाली और निहाली नामक बेटियाँ होने का उल्लेख मिलता है ।

कबीर पीढीजात जुलाहे का व्यवसाय करते थे । वे कभी पाठशाला नहीं गये; लेकिन रामानंद जी को उन्होंने अपना आध्यात्मिक गुरू मान लिया था । उनके शिष्य हिन्दू और मुस्लिम दोनों थे । कबीर ने हिंदुस्तान और हिंदुस्तान के बाहर भी कई स्थानों का भ्रमण किया था; लेकिन उनका उद्देश्य तीर्थाटन नहीं था । वे तीर्थाटन के कट्टर विरोध में थे ।

कबीर के नाम पर लगभग १५० रचनाएँ मिलती हैं; लेकिन हमारे सामने

कबीर की ऐसी कोई कृति नहीं है, जो कबीर की लिखी हुई कही जा सके। उनकी अनेक रचनाओं में से बीजक को अधिक प्रामाणिक माना जाता है ।

द्वितीय अध्याय में मैंने नारी के विकास एवं स्वरूप का वर्णन किया है। कबीर के मतानुसार आदर्श नारी और आदर्श पुरुष के संबंध कैसे होने चाहिए इसकी भी चर्चा की है।

ईश्वर ने नर-नारी द्वैत में सृष्टि निर्माण के बीज सुरक्षित रखे हैं। काम मनुष्य की एक तीव्रतम आवश्यकता है। आदिम अवस्था में कामतृप्ति के संबंध में कोई निर्बन्ध नहीं थे; लेकिन जैसे-जैसे नर-नारियों की संख्या असीम होती गयी, कामभावना पर निर्बन्ध आते गये। नर-नारियों की बढनेवाली संख्या तथा समान खूनवाले व्यक्तियों के मिलन से निर्माण होनेवाली अपाहिज तथा विकलांग संतान आदि नयी-नयी समस्याओं के कारण काम-भावना पर निर्बन्ध आते गये और यही निर्बन्ध विवाह के रूप में सामने आये। विवाह मनुष्य के विकास के लिए वरदान साबित हुआ। विवाह से परिवार संस्था का उदय हुआ और मनुष्य-जीवन में स्थिरता आयी; लेकिन बदलते समय के साथ आधुनिकता, यांत्रिकता के कारण वह परिवार से बाहर अधिक रहने लगा। परिवार के बाहर भी उसने लैंगिक संबंध स्थापित किये और यहीं से पुरुष अनेक भयंकर बीमारियों का शिकार बन गया। आज पति-पत्नी आत्मनिर्भर होने के लिए प्रयत्नशील है। नौकरी या व्यवसाय के कारण वे एक दूसरे से दूर जा रहे हैं। माता-पिता के परिवार से दूर चले जाने के कारण संतान और बूढे माता-पिता अलग-थलग पड गये हैं।

भारतीय नारी अपना अलग महत्व रखती है। एक बार विवाह होने पर जन्म-जन्मांतर के लिए उसका ही साथ चाहनेवाली भारतीय स्त्री और शादी को गुलामी समझाकर एक से अधिक पुरुषों के साथ लैंगिक संबंध रखने में गौरव समझने-वाली पाश्चात्य स्त्री- इन दोनों में बहुत फर्क है। पुरुष को प्रगति-पथ पर अग्रेसर करने-कराने में नारी माता, बहन, पत्नी, प्रेयसी आदि किसी-न-किसी रूप में प्रेरणादायी रही है। इसीलिए शायद ऐसा माना जाता होगा कि हर एक

VASU. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

कामयाब पुरूष के पीछे किसी-न-किसी स्त्री का अनमोल योग होता है। इतना सब कुछ होते हुये भी भारतीय नारी उस गौरव से वंचित रही है, जिसकी वह अधिकारिणी है। उसके जीवन में अनेक बडे-बडे उतार-चढाव आये हैं। इन उतार-चढावों को लांघते-लांघते चूर-चूर हुयी भारतीय नारी अब कहीं अपने पैरों पर खडी होने लगी है। वह नारी-अत्याचारों के खिलाफ आवाज उठा रही है, पुरूष के समान अधिकारों की मॉग कर रही है।

भारतीय नारी-जीवन के इतिहास पर नजर डालने पर ऐसा दिखायी देता है कि वैदिक काल नारी के लिए सुवर्ण युग रहा है। इस काल में पुरूष के समान नारी को भी सभी अधिकार प्राप्त थे, पैतृक संपत्ति में समान अधिकार था, धार्मिक अनुष्ठानों में उसकी उपस्थिति आवश्यक मानी जाती थी, उसे सैनिक शिक्षा भी दी जाती थी। उपनिषद काल में इन अधिकारों में धीरे-धीरे परिवर्तन आता गया और नारी-स्वतंत्रता पर प्रतिबंध आते गये। महाकाव्य-काल में भी नारी की स्थिति अच्छी नहीं रही। इस काल में नारी पुरूष वर्ग की संपत्ति एवं गुलाम बनकर रही है। 'रामायण' में सीता तो 'महाभारत' में अंबा, अंबिका, गांधारी, कुंती, द्रौपदी जैसी अनेक नारियॉ इसका प्रमाण हैं। बहु-विवाह, बाल-विवाह तथा विधवा-पुनर्विवाह-विरोध जैसी प्रथाएँ नारी के लिए बोझ बन गयी थीं। वैदिक धर्म की इन गलत प्रथाओं को मिटाने के लिए उभरे बौद्ध, नाथ, जैन सम्प्रदाय भी नारी में बुरी तरह उलझ गये। नारी ही उनके योग का अभिन्न अंग बन गयी। उनकी योग-साधना नारी के भोग से ही आरंभ होने लगी।

मध्यकाल में आकर तो नारी अधिक दुर्दशाग्रस्त बन गयी। सामाजिक अव्यवस्था, राजनीतिक उथल-पुथल, सांस्कृतिक अध:पतन, आर्थिक विषमता और धार्मिक संकीर्णता आदि के कारण इस काल में नारी ने अनेक जुल्म सहे। जर और जमीन के समान जोरू को भी संपत्ति माना जाने लगा। इस काल में नारी केवल भोग की वस्तु बन गयी थी। मुस्लिम शासकों ने नारी के सौन्दर्य एवं उसकी कोमलता को बुरी तरह कुचल दिया था। उनकी वासना भरी नजरों से बचने के लिए ही

बालविवाह, पर्दा-प्रथा जैसी कुप्रथाएँ चल पडीं और इस प्रकार वैदिक काल की घुडसवार नारी मध्यकाल में आकर नकाब के अंदर बंद हो गयी ।

आधुनिक काल में आकर भारतीय नारी योरप में हुये सामाजिक परिवर्तन और औद्योगिक क्रांति से प्रभावित हुयी । अंग्रेजी शिक्षा के प्रभाव से राजा राममोहनराय, विद्यासागर , रानडे, कर्वे, दयानंद सरस्वती, विवेकानंद जैसे महान् समाजसुधारक यहाँ निर्माण हुये । इन सत्पुरुषों के कठोर परिश्रम के फलस्वरुप भारतीय नारी में साहस निर्माण हुआ । वह घर की चार-दीवारी लांघकर पाठशाला के मार्ग पर बढने लगी और इसी क्रांतिकारी साहस से उसके जीवन में परिवर्तन की लहर आयी । युग-युग तक पराधीनता की शृंखलाओं में जकडा भारत अब स्वतंत्र हुआ है । समय के परिवर्तन के साथ नारी के प्रति भारतीयों के दृष्टिकोण में भी परिवर्तन हुआ है । समाज, राजनीति, साहित्य, नौकरी-व्यवसाय में आज भारतीय नारी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है; लेकिन परिचारिका, टंकलेखिका जैसे छोटे-छोटे पदों पर काम करनेवाली नारियों की संख्या भी कम नहीं है ।

कबीर से पूर्व और कबीर के युग में नारी का जो चित्र हमें इतिहास , धर्म और साहित्य में मिलता है वह अत्यंत दुखदायी चित्र है । तत्कालीन शासक, जनता द्वारा नारी के कुचले जाते हुये रूप को कबीर द्वारा देखा नहीं गया । उन्होंने दिशाहीन समाज को ठिकाने पर लाने के लिए, स्त्री की महानता पुनर्स्थापित करने के लिए नारी-मुक्ति का बीडा उठाया । गलत मार्ग पर चलनेवाली स्त्रियों के सामने उन्होंने पतिव्रता का आदर्श रखा । उनके मतानुसार पातिव्रत्य समय की सबसे बडी माँग है । पतिव्रता स्त्री पति के बिना सब कुछ त्याज्य एवं निरर्थक समझती है । वह अपने पति के अलावा न दूसरों की तरफ देखती है, न ही अपने पति को दूसरों को तरफ देखने देती है । उनके मतानुसार आचारण संबंधी बंधन सिर्फ पत्नी के लिए ही नहीं; बल्कि पति के लिए भी आवश्यक हैं । वे पतिव्रता स्त्री के समान ही एकपत्नीव्रती, सच्चे प्रेमी पति की भी अपेक्षा करते हैं । वे कामांध नर को शैतान कहकर उसकी निंदा करते

MAIN. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY. KOLHAPUR

हैं। नारी को काम की अधिष्ठात्री समझाकर भोग लेनेवाले नराधमों को वे शैतान कहकर दुत्कारेंगे नहीं तो क्या भगवान समझाकर उनकी पूजा करें ? अनेक उदाहरण देकर वे पुरुष जाति को बहुनारी तथा परनारी - गमन से दूर रखना चाहते हैं। कबीर मायाविनी एवं कामिनी नारी की कठोर भर्त्सना करते हैं। कबीर पर पतिव्रता नारी के गुणों का इतना असर होजाता है कि वे स्वयं राम की पतिव्रता बहुरिया बनकर भक्ति करते हैं। कबीर पतिव्रता के साथ-साथ सती नारी की भी वंदना करते हैं।

तृतीय अध्याय में मैंने कबीर के नारी संबंधी विचारों को स्पष्ट किया है।

कबीर जैसे महान युगपुरुष का निर्माण उस काल की सबसे बडी उपलब्धि थी। महान प्रतिभाशाली युगपुरुष कबीर नारी पर दिन-दहाडे होनेवाले जुल्म नहीं देख सके। तत्कालीन नारी का करुण क्रन्दन उनसे देखा नहीं गया इसीलिए उन्होंने नारी-मुक्ति की प्रतीज्ञा की। कबीर जानते थे कि नारी के पतन के लिए स्वयं नारी भी जिम्मेदार है इसीलिए उन्होंने सर्वप्रथम नारी के समाजविघातक रूपों की निंदा की। वे कामिनी नारी का स्पर्श तो क्या उसकी परछाई भी त्याज्य मानते हैं। ऐसी नारी की परछाई मात्र से जहरीला भुजंग भी अंधा हो जाता है वहाँ सामान्य मनुष्य की तो क्या ! उनके मतानुसार कामिनी नारी में पैनी छुरी की धार है, जो बहुत जल्द मनुष्य को काट लेती है। कामिनी नारी एक विष-फल है,जो दिखने में बहुत सुंदर है मगर जहरीला असर करता है। कामिनी-लिप्सा के कारण दु:ख - ही - दु:ख भुगतने पडते हैं, यहाँ तक कि नरक-कुंड जैसी महाभयंकर यातनाएँ भी भुगतनी पडती हैं। इसलिए कामिनी स्त्री से दूर रहने में ही पुरुष की भलाई है।

कबीर के मतानुसार नारी माया का एक रूप है। वह पुरुष को अपने जाल में फँसाकर उसे समूल नष्ट करती है। जो लोग उसके बाह्य-सौन्दर्य के अधीन होकर अपना अस्तित्व भूल बैठते हैं, वे हमेशा के लिए बर्बाद हो जाते हैं। जिस प्रकार दीपक अपनी ज्योति से पतिंगे को अपनी ओर आकर्षित करता है और

बादमें उसके पर जलाकर उसे नष्ट करता है उसी प्रकार माया रूपी नारी भी पुरुष को अपनी ओर आकर्षित कर उसे कहीं का रहने नहीं देती । यह सम्पूर्ण सृष्टि माया से व्याप्त है इसलिए इस मायावी जगत् में बहुत सावधानी से चलने की सलाह कबीर जी ने दी है ।

कबीर बहुनारी तथा परनारी-गमन की भी कड़ी भर्त्सना करते हैं । परनारी आसक्ति के कारण जहाँ रावण जैसे सम्राट का अस्त हुआ वहाँ हमारी-तुम्हारी बात ही क्या ! अधिक से अधिक स्त्रियों के साथ लैंगिक संबंध रखना कुछ लोग प्रतिष्ठा की बात मानते हैं; लेकिन कबीर के मतानुसार ऐसा करना जूठन खाने के बराबर है । वे परनारी को अनेक हीन उपमाएँ देकर उससे दूर रहने की पुरुष को सलाह देते हैं ।

कबीर नारी के जिन रूपों की प्रशंसा करते हैं, वे हैं -- विरहिणी, पतिव्रता, सती, प्रेमिका, भक्त नारी, माता, कन्या आदि ।

कबीर को विरहिणी की विरह-कातरता में ही सच्चे प्रेम की खुशबू आती है । विरहिणी पति-विरह में रात-दिन तड़पती है, असह्य वेदनाओं को सहती है फिर भी किसी ऐरे-गैरे की ओर झाँककर भी नहीं देखती । इसीलिए कबीर के मतानुसार विरहिणी प्रशंसा के पात्र है ।

कबीर कहते हैं, पतिव्रत्य स्त्री के लिए महान आदर्श है । पतिव्रता स्त्री समुंदर की सीप के समान होती है । जिस प्रकार सीप अनंत जलराशी में डूबी होते हुअे भी स्वाति जल-बूँद की प्रतीक्षा में प्यासी रहती है उसी प्रकार पतिव्रता भी अपने पति के मिलनार्थ व्याकुल रहती है । पतिव्रता अपने पति के व्यतिरिक्त अन्य का नाम लेना भी पाप समझती है ।

सती नारी तो कबीर के लिए साक्षात देवता का रूप है । सती नारी का अपने पति को गोद में लेकर जलती चिता में बैठना, स्मशान को मित्र पुरकाना, पति से एकाकार होने की कोशिश करना आदि बातों से कबीर अत्यंत प्रभावित हुअे । उन्होंने सती नारी की वंदना करते हुअे उसे उच्च पद पर आसीन किया है ।

प्रेमिका के संबंध में भी कबीर की आदर्श धारणा है। प्रेमिका यह नारी का एक सुन्दर एवं पवित्र रूप है। इसलिए कबीर स्वयं राम की प्रेमिका बने। नारी के माता रूप के सामने तो कबीर नतमस्तक हुये हैं। उन्होंने वैष्णव पुत्र को जन्म देनेवाली माता को धन्य माना है। कबीर ने नारी को भक्तिमार्ग में सम्मिलित कर भक्ति का पथ प्रशस्त बनाया। वे भक्त पनिहारी नारी के सामने सम्राज्ञी को भी उपेक्षणीय समझते हैं। नारी के कन्या रूप की उन्होंने प्रशंसा ही की है और उसे साज-शृंगार जैसी व्यर्थ बातों से दूर रहने की सलाह दी है।

कबीर ने नारी के लिए जिन उपमाओं का प्रयोग किया है, बहुत ही सोच-समझकर किया है। उन्होंने नारी में सर्पिणी की चंचलता, सुन्दरता, चपलता देखी, नागिन का जहरीला विष देखा, जीवन को तत्काल मृत्यु में बदल देनेवाला विष जैसा प्रभाव देखा। कबीर ने नारी-लिप्सा के कारण नरक जैसी यातनाएँ भोगनेवाले लोग देखे, स्त्री में अग्नि की दाहकता देखी, तृष्णा से व्याकुल व्यक्ति के समान नारी-भोग के लिए तडपनेवाले लोगों को देखा, नारी में बिल्ली और बाघिन की हिंस्त्रता देखी, मधुमक्खी की आक्रमकता देखी, पैनी छुरी की धार देखी, डाकिनी बनकर पुरुष समाज को लूटते हुये देखा, स्त्री में अफीम जैसा नशा भी अनुभव किया इसीलिए उन्होंने नारी के लिए इन उपमाओं का प्रयोग किया है। इन उपमाओं के द्वारा कबीर नारी को भयंकर बताकर गलत राह पर चलनेवाले समाज को नारी से दूर रखना चाहते थे। सिंह-शावक, शूरवीर, दासी जैसी अच्छी उपमाओं के द्वारा कबीर ने नारी का गौरव भी किया है।

कुछ आलोचक कबीर का संपूर्ण अध्ययन किये बिना ही उनपर नारी-निंदक का लेबुल चिपकाते हैं; लेकिन उनका यह आरोप उचित नहीं है; क्योंकि नारी से पाँच प्रकार के रस प्राप्त करने की बात करनेवाले योगियों के लिये नारी पीठा फल नहीं तो विष-फल है ऐसा धमकाकर बताना आवश्यक था। नारी के शरीर पर हावी कर्तव्यमूढ शासक समाज को ठिकाने पर लाने के लिए नारी शीतल छाया नहीं तो अग्नि-ज्वाला है ऐसा जोर देकर कहना आवश्यक था।

स्त्री के भोग में लिप्त समाज की बाहों में दम घुंट रही नारी को मुक्त करने के लिए उसे माया कहकर भर्त्सना बतलाना आवश्यक था । कबीर ऐसा नहीं करते, तो न जाने स्त्री की क्या दुर्गति होती ! कबीर ने जो किया नारी की भलाई के लिए किया; लेकिन बदकिस्मती यही है कि नारी की भलाई के लिए ही उन्हें नारी की निंदा करनी पड़ी । कबीर द्वारा बतायी हुई बहुत-सी विशेषताएँ नारी में जन्मजात पायी जाती हैं । अत: कबीर ने जो किया, एक समाज सुधारक के नाते उचित ही था ।

कबीर कालीन परिस्थितियाँ और नारी की स्थिति का सूक्ष्म अध्ययन करने के बाद नारी-निंदा के कई कारण सामने आते हैं । प्राचीन काल से कबीर काल तक परंपरागत रूप से नारी की होती आयी निंदा, नारी को कमजोर समझने की समाज की प्रवृत्ति ,धार्मिक अनुष्ठानों में स्त्री की गौणता, तत्कालीन शासकों की नारी के प्रति कामुकता, सिर्फ नारी के लिए ही सामाजिक,सांस्कृतिक, धार्मिक बंधनों की बहुलता, अध्यात्म के क्षेत्र में नारी की उपेक्षणीयता,अर्थिक क्षेत्र में स्त्री की दयनीयता तथा कबीर की पारिवारिक स्थिति आदि कबीर द्वारा नारी-निंदा के प्रमुख कारण रहे हैं ।